गुरु तेग बहादुर जी

SRI G. TEG BAHADUR SAHIB JI

...जी की यात्राएं

...या, सिफत लिखण लई तेरी,
...कलम चले इह मेरी।"

...ृति अपनी अनेक विशेष-
...ा और संस्कृति के इतिहास
...अत्याचारों से पीड़ित भा-
...ने के लिए सिक्ख गुरु-
...य हैं।
... गुरु तेग बहादुर का त्याग
...न का एक गौरवशाली औ-
... बहादुर जी का जन्म
...। यह सिक्खों के नौवें
...नाम त्यागमल था। उन
... उनके पिता ने उनका
...तेग बहादुर रख दिया।
...की मुर्ति गुरु तेग बहादुर
...२० वर्षों तक "बाबा बका-
...ना की।
भारत के वीर सपूत
... की मूरत, भक्ति की
...तेग बहादुर जी का आग-
...हुआ, उस समय औरंग-
... की मुसलमान बनानेके
...याचार हिन्दुओं पर
...जाति, धर्म और देश
... अपने प्राणों का बलिदान

Gurudwara Bangla Sahib (Delhi) गुरुद्वारा बंगला साहिब (दिल्ली)

GOLDEN TEMPLE, AMRITSAR ਦਰਬਾਰ ਸਾਹਿਬ, ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰ दरबार साहिब, अमृतसर

गुरु तेग बहादुर जी की यात्राएं

"कागज, कलम उठा लई साईंया, सिफत लिखण लई तेरी
करो मेहर गुरू तेग बहादुर, कलम चले इंह मेरी।"

भारतीय संस्कृति अपनी अनेक विशेषताओं के कारण विश्व सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में शीर्षस्थ है। मुसलमानों के अत्याचारों से पीड़ित भारतवासियों को मुक्ति दिलवाने के लिए सिक्ख गुरूओं का बलिदान अविस्मरणीय है।

गुरू तेग बहादुर का त्याग और बलिदान हमारे इतिहास का एक गौरवशाली और अमिट अध्याय है। गुरू तेग बहादुर जी का जन्म अमृतसर नगर में हुआ था। यह सिक्खों के नौवें गुरू थे। उनके बचपन का नाम त्यागमल था। उन की वीरता से प्रभावित होकर उनके पिता ने उनका नाम त्यागमल से बदलकर तेग बहादुर रख दिया। धैर्य, वैराग्य और त्याग की मुर्ति गुरू तेग बहादुर जी ने एकांत में लगातार २० वर्षों तक "बाबा बकाला नामक स्थान पर साधना की।

भारत के वीर सपूत सिक्खों के नवें गुरू तपस्या की मूरत, भक्ति की प्रतिमूर्ति, तेज से युक्त गुरू तेग बहादुर जी का आगमन जिस समय भारत में हुआ, उस समय औरंगजेब का शासन था। हिन्दुओं को मुसलमान बनानेके लिए वह तरह तरह के अत्याचार हिन्दुओं पर कर रहा था। ऐसे समय में जाति, धर्म और देश को बचाने के लिए गुरू जी ने अपने प्राणों का बलिदान

Date _____ Topic _____

दिया। गुरू तेग बहादुर आध्यात्मिक रंग में ही रंगे हुए थे। उनका सामाजिक जीवन मौन था। गुरू तेग बहादुर जी ने गद्दी पर बैठते ही सिक्खों का संगठन किया। आनंदपुर नामक स्थान बसाया और विभिन्न स्थानों पर घूमकर अपने विचारों का प्रचार किया। उन्होंने यह महसूस किया किया कि आंतरिक और बाहरी दोनों तरह से सिक्ख धर्म को खतरा है। केवल गुफा में बैठकर नाम का सिमरन करने से धर्म को संरक्षित नही किया जा सकता है। गुरू तेग बहादुर जी अमृतसर से धुकेवली गए और वहाँ की सुंदरता देखकर उस स्थान का नाम "गुरू का बाग़" रख दिया वहाँ से वे तरणतारण खडूर साहिब, गोइंदवाल और महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा करते हुए पंजाब के मालवा प्रदेश में दाखिल हुए। उन्होंने तलवंडी साबो और मंडी महिसार खाना धमधान आदि स्थानों का दौरा किया। 4 वर्षों के लिए गुरू साहिब उत्तर प्रदेश और बिहार से होते हुए पूर्वी भारत के लिए रवाना हुए। उनकी यात्राओं में उनकी माता, पत्नी और भक्त मतिदास भाई सतीदास और भाई दयाला जी भी उनके साथ थे। गुरू साहिब अंत में धमधान पहुँचे जहां पर उनका उपदेश सुनने के लिए हजारों की संख्या में लोग आने लगें। यहां औरंगजेब के आदेश पर उन्हे गिरफ्तार किया गया और मुगल बादशाह के सामने पेश किया गया। औरंगजेब उन्हें मौत की सजा देना चाहता था, परन्तु आमेर के राजा रामसिंह ने उसे भरोसा दिलाया और उनकी जिम्मेदारी ली। इसके बाद उन्हें मथुरा, वृंदावन, आगरा, कानपुर, प्रयाग

Date _____ Topic _____

और बनारस की यात्रा की। यात्राओं के दौरान उन्होंने प्रचलित अन्धविश्वासों, पाखंडों और कर्मकांडों का विरोध किया और उन्हें निराकार ईश्वर के नाम का ध्यान करने का निर्देश दिया। इसके बाद गुरू साहिब बिहार, पटना साहिब और बौधगया आदि स्थानों की यात्रा भी की। इसके बाद वे राजा रामसिंह के साथ असम चले गए। इस क्षेत्र में गुरू साहिब जी की यात्रा के बारे में बी. एस. आनंद लिखते हैं "गुरू साहिब की यात्रा रेगिस्तान में अचानक फूट पड़ने वाले ताजे पानी के फव्वारे की तरह थी।" गुरूजी ने उपदेश दिया कि "न किसी को डराओ और न किसी से डरो"। उन्होंने हिन्दुओं का मनोबल बढ़ाया। उन्होंने लोगों को कहा कि "कायरता छोड़कर निडरता से अपने धर्म का पालन करें।"

हरबंस सिंह अपनी पुस्तक 'गुरू तेग बहादुर' में लिखते हैं "गुरू तेग बहादुर जी कि यात्रा ने एक तूफान ला दिया। यह न तो पहले जैसा देश रहा और न ही लोग। उनमें एक नई जागृति आ चुकी है।"

आखिर 21 नवम्बर 1675 को गुरूजी ने अपना बलिदान दिया। जब सिर काटा गया तो उनके गले से एक कागज बंधा हुआ था जिस पर लिखा हुआ था "सिर दिया पर सिरड़ न दिया।" आज भी गुरूद्वारा शीशगंज साहिब और रकाबगंज साहिब गुरू तेग बहादुर जी के बलिदान की याद दिलाता है।

गुरू तेग बहादुर जी नेकेवल धार्मिक नेता ही नही थे बल्कि अच्छे साहित्यकार

Date _____ Topic _____

भी थे। उन्होंने स्वंय भी अनेक रचनाऐं की और साहित्यकारों का भी सम्मान किया।

गुरू तेग बहादुर जी के तीन प्रमुख सिद्धान्त थे। नाम, दान और स्नान। गुरूजी का विचार था - आठ पहर चौंसठ घड़ी, उठते, बैठते, सोते, जागते हमेशा परमात्मा का नाम लेना चाहिए।

"साधो गोबिन्द के गुन गावओ।
मानस जनमु अमोलक पायो
विरथा काहे गवावहु।"

जैसे दहलीज पर रखा हुआ दीपक अंदर और बाहर दोनों तरफ रोशनी करता है, उसी तरह से परमात्मा का नाम लेने वाला व्यक्ति अंदर और बाहर दोनों तरफ से प्रकाशित होता है। गुरूजी का दुसरा सिद्धान्त था "दान" उनका विचार था जितना भी हो यथाशक्ति दान करें। तीसरा सिद्धान्त था "स्नान" का। गुरूजी का विचार था कि स्नान से शरीर पवित्र होता है, दान से हाथ और मन पवित्र होते है और नाम जपने से वाणी पवित्र होती है और मन पवित्र होता है।

गुरूजी आडम्बरों और पाखण्ड के विरोधी थे। गुरूजी सच्चे अर्थों में तेजस्वी, महात्मा और देशभक्त थे।

H.O.S.
SKV Ramesh Nagar,
New Delhi-15

for

HOS
SKV Ramesh Nagar
New Delhi-110015

ज्ञानकोश

नाम - गुरु तेग बहादुर सिंह
जन्म - 18 अप्रैल 1621
जन्मभूमि - अमृतसर, पंजाब
मृत्यु - 24 नवम्बर 1675
मृत्युस्थान - चाँदनी चौक, नई दिल्ली
अभिभावक - गुरु हरगोविन्द सिंह और माता नानकी
पत्नी - माता गुजरी
संतान - गुरु गोविन्द सिंह
कर्मभूमि - भारत
पुरस्कार-उपाधि - सिक्खों के नौवें गुरु
रचनाऐं - हुकमनामे, सिखया कुर्बानी दा सूरज, सच्चा मल्लाह, लुबाने दी अरजोई, गुरु लाधो रे, कुर्बानी दक्खं दा पंध

14/C

Zone – 16

Name → Vanshika Kachwaha

Class → IXA

Student Roll No → 44

Student Id. → 2020011329

Fathers Name's → Satish Kumar (Ph.No:- 7982094666) Saini

Mother's Name → Mamta Saini

School → S.K.V. Ramesh Nager New Delhi -15

School Id. → 1516027